वे नहीं सोचते...

उनके घरों में रेतघड़ियां रखी हैं
जिनमें रेत का गिरना
बन्द हो चुका है
और समय उनके लिए रुक गया है।
तब तक वे कुछ पुराने हिसाब
चुकता करेंगे
मुहम्मद गोरी और गजनवी से लेकर
बाबर-औरंगजेब तक का।
तब तक वे लौटाने की कोशिश करेंगे
स्वतंत्र प्रतियोगिता का स्वर्णिम युग।
पर क्यों नहीं सोच पाते वे
कि समय का जन्म घड़ियों से नहीं हुआ है!
क्यों नहीं सोच पाते कि
ध्वंस करे भीषण भले ही कुछ समय के लिए,
गढ़ता नहीं है कभी भी इतिहास को उन्माद!
क्यों नहीं सोचते वे कि
कई-कई दिनों तक
अलेक्जेण्ड्रिया के पुस्तकालय के जलते रहने के बाद भी
नालन्दा और तक्षशिला के महाध्वंस
और दजला नदी में
फूली हुई पुस्तकों का पुल बन जाने
के बाद भी
इतिहास-बोध का वजूद नहीं मिटा
विज्ञान जला नहीं ब्रूनों के साथ,
झुका नहीं गॅलीलियों के माफीनामे के साथ,
गीत मरे नहीं
नात्सी यातना-शिविरों में भी!

आखिर वे क्यों नहीं सोच पाते कि
विपर्यय तो हुए हैं पहले भी बार-बार,
पर वे नहीं बन सके कभी भी
इतिहास के नियम।

वे सोच नहीं सकते शायद
क्योंकि
इस नहीं सोचने पर ही
टिका हुआ है
उनका वजूद!

कात्यायनी

('वर्तमान साहित्य' से साभार)